शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

धैर्य के महामेरु : सरदार वल्लभभाई पटेल

विनोबा

सरदार वल्लभभाई पटेल का 'सरदार' नाम इसलिए चला कि वे घन की चोटें सहने वाले हीरे के समान थे। बापू के युद्ध के वे बहादुर सैनिक थे। वे बापू के अनुयायी थे, उनके सेनानी थे। कसौटी के किसी भी मौके पर वे कभी पीछे हटे नहीं। इतिहास में छोटी-छोटी बातें बाकी नहीं रहतीं। आज हमें जिन बातों का महत्व मालूम होता है, वे सौ-दो सौ साल के बाद नहीं रहेंगी। फिर भी सरदार वल्लभभाई की दो बातें इतिहास में रह जायेंगी। एक उनका बारडोली सत्याग्रह और दूसरी बात, भारत का अखंड-संधान।

सारी किसान जनता को उन्होंने जगाया, मानो बिजली का संचार कराया। सरदार की हड्डी किसान की थी। यद्यपि वे बैरिस्टर थे और राजनीति-चतुरों के दांवपेंच भी खेल सकते थे, तो भी आखिर तक देहाती ही रहे। देहातियों की तरह खुरदुरी भाषा बोलते थे, और उनकी बात जिनमे लिए लागू होती थी, उन्हें वह चुभती भी थी। परंतु सरदार का हृदय कोमल था। वह कोमल हृदय किसानों के दुःख से द्रवित हुआ। उनके हृदय की वह कोमलता किसानों के लिए दौड़कर आयी। हिंसक युद्ध का शास्त्र बहुतसा लिखा गया है, परंतु अहिंसक युद्ध का शास्त्र अभी लिखना बाकी है। 'बारडोली सत्याग्रह', उस शास्त्र के एक सफल प्रयोग के नाते अंकित किया जाएगा।

दूसरी महत्व की बात है कि उन्होंने अनेक छोटे-छोटे राज्यों को विलीन कर इस देश में एक अखंड राज्य स्थापित किया। इस देश के इतिहास में यह बात अभूतपूर्व घटना के नाते अंकित होगी। मैंने इन दो बातों का उल्लेख किया। पर उतने से उस महान पुरुष का गुणवर्णन पूरा नहीं होता। वे शासन के सूत्रधार थे, इसलिए भारत की जनता में विश्वास और हिम्मत रही। शिवाजी के कारण जिस प्रकार सारी जनता से हिम्मत से रही, उसी प्रकार सरदार के कारण भी रहती थी। सरदार भय जानते ही नहीं थे। विचार यदि ठीक है, तो उसके अनुसार कृति होनी चाहिए, यह उनका बहुत बड़ा गुण था। उनके गुणों को कुल मिलाकर देखने से उनकी तुलना लोकमान्य से होती है। वे लोकमान्य के समान विद्वान नहीं थे। लेकिन उनके गुणों की, विशेषकर उनके धैर्य की तुलना लोकमान्य से होती है। बोलना साफ, फिर किसी को कैसा भी लगे। प्रहार करते समय निडर होकर करते थे और बदले में अपने पर प्रहार हो, तो डगमगाते नहीं थे। सरदार बापू के बिलकुल नजदीक थे। जिस दिन बापू गये, उस दिन उनकी बिलकुल आखिरी मुलाकात जो हुई वह सरदार से ही हुई। सरदार बापू से मिलकर गये और बापू भगवान के पास चले गए। सरदार घर तक भी नहीं पहुंचे थे कि उन्हें लौटना पडा। परंतु इतना निकट का सान्निध्य होते हुए भी बापू की मृत्यु के निमित्त से उनकी आंखों से आंसू नहीं निकले। बापू के वियोग के शोक को उन्होंने हृदय में दफना दिया और प्राप्त कर्तव्य में लग गये। यह पुरुष धैर्य का ऐसा महामेरु था।

ऋषि तर्पण, विनोबा साहित्य, खण्ड : 19